अच्छी सास

रचयित्री
आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म. प्र.)

- **कृति** : अच्छी सास
- **रचयित्री** : आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी
- **संस्करण** : प्रथम, मार्च, 2010
- **आवृत्ति** : 1100
- ISBN : 978-81-909449-1-5
- **सर्वाधिकार** : प्रकाशकाधीन
- **लागत मूल्य** : 10/-
- **प्राप्ति स्थान** : धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
  सागर (म. प्र.)
  094249-51771
  dharmodayat@gmail.com

- **मुद्रक** : विकास आफसेट, भोपाल

अपनी बात

श्रमण संस्कृति के वीतरागी निर्ग्रन्थ निष्पृही साधुओं के चरणों से भारत वसुन्धरा सौभाग्यशाली मानी जाती है। इन निष्पृह साधकों का लक्ष्य अपनी आत्मा का कल्याण करना ही रहा है। लेकिन भारतीय संस्कृति के रग-रग में दया, करुणा, परोपकारिता हर क्षण पलती रहती है या यूँ कहें कि दिगम्बर संतों के बाह्य एवं अंतरङ्ग आचरण में, क्रियाओं में, वचनों में स्व-पर उपकार की भावना निरंतर बनी रहती ही है। यद्यपि साधक अपनी साधना, त्याग, तपस्या ध्यान को माध्यम बनाकर अपना कल्याण करते ही हैं तथापि वह धर्मोपदेश, अध्ययन, लेखन, साहित्य..... आदि के माध्यम से समाज, देश, विश्व का भी उपकार करते हैं। कहा भी है कि साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यकार यदि निष्पृह साधक है तो वह साहित्य निश्चित ही कल्याणकारी होता है।

साहित्य के माध्यम से व्यक्ति अपनी मानसिक, वाचिक, कायिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, सामाजिक समस्याओं का समाधान पाकर अपने जीवन को सुंदर और सुचारु बना सकता है। इसी साहित्य सृजन के क्षेत्र में पूज्य आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी का नाम अपना अलग ही स्थान रखता है। सत्साहित्य और अध्यात्म रसिकों से पूज्य आर्यिका श्री का नाम अछूता नहीं है।

पूज्य आर्यिका श्री ने संसारी प्राणियों की वेदना से द्रवित होकर ही स्वकल्याण के क्षणों में से समय निकालकर ही इन सामाजिक, नैतिक कृतियों का सृजन किया है। पूज्य आर्यिका श्री की संस्कार मञ्जूषा, शील मञ्जूषा, पलायन क्यों?, अनर्थदण्ड क्या?, बहू कैसी?.... आदि अनेक कृतियों की श्रृंखला में ही यह नवीन कृति 'अच्छी सास' है।

जहाँ बहू कैसी? कृति में एक माँ अपनी लाड़ली बिगड़ी हुई बेटी को युक्तियों के माध्यम से वास्तविक जीवन से परिचय करवाकर उसे ससुराल में प्रसन्नता से रहना सिखाती है। वहीं 'अच्छी सास' में एक सास अपनी उदण्ड भौतिक परिवेश में पली बहू को भी अपना प्रेम वात्सल्य देकर धर्म से जोड़ती है और उसके दाम्पत्य जीवन में बहार लाकर उसे परिवार, समाज यहाँ तक कि साधु संघ में भी प्रतिष्ठा प्राप्त करवा देती है।

मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि पूर्व कृतियों की भाँति यह कृति भी आपके अपने जीवन में बसंत सी बहार अवश्य लायेगी और आप भी अपनी बहुओं को परिवार, समाज, देश में प्रतिष्ठित बनाकर उसका और अपना जीवन सुख शांतिमय बना सकेंगे।

अंत में पूज्य आर्यिका श्री के चरणारविन्द में नंत-नंतशः नमन करते हुए यही प्रार्थना करती हूँ कि आपकी लेखनी से समाज को मंजुल साहित्य इसी प्रकार युगों-युगों तक मिलता रहे और हम सभी भी आपके समान ही स्वपरोपकारी बन सकें।

इसी भावना से वंदामि

संघस्था आर्यिका आदित्यमती

अच्छी सास

पात्र परिचय

गुना	:	यशा की ससुराल
जबलपुर	:	यशा का पीहर
नन्दकुमार	:	ससुर
नन्दा	:	सास
यशोमती और भविता	:	ननद
भव्य	:	पति
यश	:	जेष्ठ
जय	:	देवर
जयिता	:	जेठानी
श्रेयसी	:	देवरानी
कुन्दकुमार	:	पिता
कुन्दलता	:	मम्मी
शौर्य	:	भतीजा
सौम्या	:	बहिन
श्यामू	:	नौकर
मुन्ना	:	बेटा
रूपाली	:	सहेली
पुण्य	:	भैया
भावना	:	भाभी
आर्यिका	:	
बड़ी आर्यिका	:	
दादी	:	

अच्छी सास

कुन्दकुमारजी की बेटी यशा का विवाह गुना नगर के श्रेष्ठी नन्दकुमारजी के पुत्र भव्य के साथ हो गया। यशा थोड़ी सनकी स्वभाव की है, उसे धर्म के प्रति विशेष आस्था नहीं है। प्रातःकाल लगभग साढ़े छह बजे नन्दा आवाज लगाती है –

नन्दा : बेटी यशा! उठ जाओ साढ़े छह बज चुके हैं।

(यशा नन्दा की आवाज सुनकर करवट लेकर फिर सो जाती है। 10 मिनिट के बाद)

नन्दा : बेटी यशा! दूध गरम हो गया है, जल्दी उठो, मंजन करके दूध पी लो।

यशा : (बड़बड़ाती हुई) हाय राम रे, ये मम्मीजी भी पीछे ही लगी रहती हैं, अभी तो पौने सात बजे हैं, अभी से उठ जाओ, दूध पी लो। आखिर इतना जल्दी उठकर कहाँ जाना है? (जोर से) हाँ मम्मीजी! अभी आ रही हूँ, आप सब दूध पीओ। मैं भी आ रही हूँ।

(थोड़ी देर में यशा उठती है, कुल्ला करके दूध पीती है और अपने काम में लग जाती है।)

नन्दा : बेटी भाविता! जल्दी नहा धोकर तैयार हो जाओ और भाभी को भी कह दो, तैयार हो जाए, मंदिर जाने का समय हो गया है।

भाविता : आओ भाभी! अपन जल्दी-जल्दी कपड़े धोकर नहा लेते हैं, फिर मंदिर चलना है।

यशा : दीदी, आप भी क्या? मम्मीजी जैसे मंदिर-वन्दिर के चक्कर में पड़ी रहती हो, मंदिर में महिलाएँ करती ही क्या हैं? इधर-उधर की बातें, किसी की बुराई तो किसी

की प्रशंसा।

भाविता : नहीं भाभी! ऐसी कोई बात नहीं है कि सभी लोग केवल बातें ही करते हो। और फिर दुनिया कुछ भी करे। हमें धर्म करना है तो हम मंदिर में बातें नहीं करें तो हमारा कल्याण तो हो ही जायेगा।

यशा : हाँ, दीदी सोचते तो सभी यही हैं कि हम मंदिर में बातें नहीं करें, लेकिन वहाँ जाने के बाद बातें करने का मन हो ही जाता है।

नन्दा : भाविता, यशा चलो तैयार हो गई क्या? चलो आ जाओ, बड़ी बहू तुम भी जल्दी चलो, भगवान् का अभिषेक हो जायेगा। फिर लेट हो गए तो अभिषेक देखने को नहीं मिलेगा।

(यशा बिना मन के सास तथा ननद के साथ मंदिर चली जाती है।)

एक दिन यशा रसोई घर में काम कर रही थी। उसने बॉटल में से घी निकाला और ढक्कन लगाकर अलमारी में रखने जा रही थी कि उसके हाथ से बॉटल फिसल कर छूट गई। जमीन पर गिरते ही बॉटल फूट गई। घी जमीन तथा पाँव पौंछने की फट्टी पर गिर गया। घी गिरते ही यशा की धड़कन बढ़ने लगी। शीशी गिरने की आवाज सुनकर नन्दा आती है।

नन्दा : यशा, ये क्या किया पूरा एक-डेढ़ किलो घी की बॉटल जमीन पर गिरा दी। ऐसे कैसे गिर गई बॉटल?

यशा : (रोती सी) मम्मीजी मैं बॉटल अलमारी में रखने जा रही थी कि अचानक बॉटल हाथ से फिसल कर जमीन पर गिर गई।

नन्दा : यशा, इसलिए तो मैं तुम्हें कई बार कह चुकी हूँ कि घी-तेल निकालते ही तत्काल बॉटल को साफ पौंछ लिया करो। तत्काल बॉटल पौंछ लेने से बॉटल चिकनी नहीं होती है। तुमने ध्यान नहीं दिया इसलिए आज यह फल मिल ही गया। चलो जल्दी-जल्दी सफाई कर लो अभी भव्य आ जायेगा तो तहलका मचा देगा।

(यशा और नन्दा जल्दी-जल्दी फर्स पर गिरे घी को पौंछती हैं, पौंछते-पौंछते नन्दा के हाथ में एक काँच चुभ जाता है, खून निकलने लगता है वह पट्टी बाँधती है, तभी भव्य आ जाता है।)

भव्य : माँ, क्या हो गया। आप अपने हाथ में पट्टी क्यों बाँध रही हैं, क्या कहीं लग गई है।

नन्दा : नहीं, बेटा, फर्स साफ कर रही थी कि काँच चुभ गया, सो थोड़ा-सा खून निकल गया, इसलिए पट्टी बाँध रही हूँ।

भव्य : रसोई घर में फर्स पर काँच कहाँ से आ गया (फर्स देखते हुए) क्या घी-तेल की बॉटल फूट गई? पूरा फर्स चिकना-चिकना क्यों लग रहा है?

नन्दा : हाँ, घी की बॉटल चिकनी थी, सो हाथ से फिसल कर गिर गई। थोड़ा घी भी फर्स पर गिर गया था इसलिए फर्स चिकना हो गया।

भव्य : (गुस्से में) माँ, ये काम तो पक्का यशा से हुआ होगा, वो ही करती है ऐसे उल्टे-सीधे काम।

नन्दा : नहीं बेटा, वो तो ध्यान से ही अच्छी तरह बॉटल पकड़े थी, लेकिन क्या पता कैसे गिर गई कुछ समझ में ही नहीं आया।

भव्य : (जोर से) माँ तुम तो रोज-रोज इसका पक्ष ले लेती हो, थोड़ा एक-आध बार मुझे सीधा कर लेने दो तो पूरी अकल ठिकाने आ जायेगी।

नन्दा : चलो जाओ, तुम अपना काम करो। तुम क्या सीधा कर दोगे। वैसे ही बेचारी तुम्हारे नाम से काँपती है।

(भव्य चला जाता है)

नन्दा : यशा तुम झाड़ू-पौंछा कर लो, यशोमती तुम रसोई साफ कर लो और मैं कपड़े डाल देती हूँ, फिर अपन सब चलते हैं।

यशा : मम्मीजी, मेरी तो कमर दुख रही है, मैं थोड़ी देर सो रही हूँ। दीदी, झाड़ू-पौंछा भी आप ही कर लेना (ऐसा कहकर कमरे में जाकर सो जाती है।)

(नन्दा और यशोमती दोनों जल्दी-जल्दी सभी काम निपटा देती हैं।)

यशोमती : भाभी, उठो सब काम निपट गया। तैयार हो जाओ, अपन बाजार चलते हैं।

(यशा तैयार हो जाती है, सब बाजार चले जाते हैं।)

(यशोमती सामान की टोकरी यशा को देती हुई कहती है।)

यशोमती : भाभी लो, थोड़ी यह टोकरी पकड़ लो, मेरा हाथ दुखने लगा है।

यशा : दीदी, मेरे हाथ तो पहले से ही दुख रहे हैं, मैं इतनी बड़ी टोकरी उठाकर नहीं चल पाऊँगी।

यशोमती : भाभी, थोड़ी दूर तक ले लो फिर मैं वापस ले लूँगी।

(यशा यशोमती की बात टालकर आगे-पीछे हो जाती है।)

नन्दा : लो यशा, यह बैग पकड़ लो, इसमें कोई वजन नहीं है।
(यशा नन्दा से बैग लेकर जय को पकड़ा देती है।)
(एक दिन सास-बहू मंदिर गईं थीं। एक वृद्धा ने यशा से स्वाध्याय सुन करके नन्दा से कहा)

वृद्धा : बहू नन्दा! तुम्हारे यहाँ तो बड़ी होशियार बहू आई है, तू तो बड़ी भाग्यशाली निकली। तेरी बहू घर के काम-काज भी अच्छे से करती होगी।

नन्दा : हाँ, काकीजी! बहूरानी बहुत अच्छी है, बहू के आने से मैं तो आराम में हो गई। मुझे तो कुछ काम करने ही नहीं देती है। मैं भले ही जबरदस्ती काम करूँ तो बात अलग है।
(कुछ दिनों के बाद नन्दा अपने पीहर बनारस जाती है, वहाँ से तीन साड़ियाँ खरीद कर लाती है।)

नन्दा : लो यशा, इन दोनों साड़ियों में से एक तुम ले लो और एक यशोमती ले लेगी। बड़ी बहू तुम ये ले लो।

यशा : (साड़ी देखती हुई) मम्मीजी, मुझे तो दोनों में से एक भी साड़ी पसन्द नहीं आई। ये साड़ियाँ तो देहाती महिलाओं के लिए पहनने जैसी हैं, इनकी डिजायन, क्वालिटी, रंग आदि सब पुराने जमाने जैसे लगते हैं।

नन्दा : नहीं यशा! आजकल ऐसे ही कलर की फैशन है, सब लोग ऐसे ही कलर और ऐसी ही डिजायन पसंद कर रहे हैं। मैंने बनारस में कई महिलाओं को ऐसी साड़ियाँ पहने देखा तो मेरा भी मन हो गया कि मैं तुम्हारे और यशोमती के लिए भी ऐसी साड़ी खरीद लूँ।
(यशा साड़ी ले लेती है और कमरे में ले जाकर पेटी में सबसे नीचे रख लेती है।)

भव्य : यशा! आज तो दीपावली है, मम्मी जो बनारस से साड़ी लाईं थीं, वो ही साड़ी पहनना, तुमने अभी तक एक बार भी वो साड़ी नहीं पहनी।

यशा : ओ! आपको वह साड़ी अच्छी लगी, बिल्कुल गँवारों जैसी साड़ी। पहनने की बात तो बहुत दूर, मुझे तो वह देखने में भी अच्छी नहीं लगती, इसलिए मैंने उसे पेटी में सबसे नीचे रख ली।

भव्य : नहीं, आज तो तुम्हें वो ही साड़ी पहननी पड़ेगी, मम्मी बड़े प्रेम से खरीद करके लाईं थीं, उनका सम्मान तो तुम्हें रखना ही होगा।

यशा : हाँ, मम्मीजी का सम्मान तो मैं अवश्य रखूँगी, लेकिन क्या ऐसी-वैसी साड़ी पहन लेने से ही उनका सम्मान होगा। क्या किसी अन्य विधि से सम्मान नहीं हो सकता।

भव्य : यशा, प्रेम से लाई गई वस्तु का रंग-रूप, स्वाद नहीं देखा जाता। प्रेम का रूखा-सूखा भोजन भी तो स्वादिष्ट ही लगता है। आज तुम वही साड़ी पहनोगी।
(यशा चुपचाप सास के द्वारा लाई गई साड़ी पहन लेती है। मंदिर में उसकी साड़ी की दो-चार महिलाएँ प्रशंसा करती हैं, उसे सुनकर उसका मन कुछ संतुष्ट होता है।)
एक दिन यशा के पापा का फोन आता है कि पुण्य यशा को लेने आ रहा है, यशा समाचार सुनकर खुश हो जाती है।)

जयिता : लो यशा जल्दी-जल्दी पापड़ बेल लो। पुण्य तुम्हें लेने आ रहे हैं, उनको अपन नए पापड़ खिलाएँगे। (यशा प्रसन्नता से ढाई-तीन घंटे में बेले जाने वाले पापड़ फटाफट दो-ढाई घंटे में बेल लेती है।)

भव्य : यशा, मुझे तो पता ही नहीं था कि तुम इतना जल्दी और इतना सफाई से काम करना भी जानती होगी। आज तो तुम इतनी देर से काम कर रही हो फिर भी बड़ी खुश नजर आ रही हो।

यशा : जी, आप तो मेरी मजाक बनाते हैं, मैं तो रोज ही जल्दी-जल्दी और सफाई से काम करती हूँ, मैं तो कभी आलस करती ही नहीं हूँ।

भव्य : नहीं, नहीं आज तो कोई न कोई विशेष बात जरूर है, मुझे भी बताओ आज तुम इतनी प्रसन्न क्यों हो?

यशा : आप तो जानते हुए भी अनजान से बने रहते हैं, क्या आपको पता नहीं है कि कल परसों पुण्य मुझे लेने आ रहा है।

भव्य : (ठहाका लगाते हुए) अच्छा तो आज रानीजी इसलिए जल्दी-जल्दी काम कर रही हैं और इतना काम करके भी थकी नहीं हैं, मैं तो भूल ही गया था कि तुम्हें पुण्य लेने आ रहा है।

(एक दिन यशा का भैया पुण्य लेने आ जाता है।)

नन्दा : आइये पुण्य आइये जयजिनेन्द्र और पुण्य अच्छे हो, आपके मम्मी, पापा, भैया आदि सब अच्छे हैं?

पुण्य : (चरण छूते हुए) जयजिनेन्द्र हाँ, मम्मीजी सब अच्छे हैं, लेकिन सबको दीदी की बहुत याद आ रही है (मैं दीदी को ही तो लेने आया हूँ।)

भव्य : अब दीदी तुम्हारी नहीं हमारी है, हमारे घर का सदस्य है, तुम ले जाओगे तो क्या हमें याद नहीं आयेगी?

जय : हाँ, पुण्य तुम भाभी को ले जाओगे तो क्या हमारे घर में सूना-सूना नहीं हो जाएगा।

नन्दा : कुछ नहीं रे, जय कोई भाभी महिनों के लिए थोड़ी जा रही हैं। 4-6 दिन में तो वापस लौट आयेगी।

यशा : बस, इतने महिनों के बाद जा रहीं हूँ और 4-6 दिन में वापस आ जाऊँ। नहीं, मम्मीजी मैं कम से कम 15 दिन तो किसी भी हालत में नहीं आऊँगी।

(यशा पुण्य के साथ जबलपुर चली जाती हैं। कुछ दिनों के बाद नन्दा का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। जयिता को रसोई का काम नहीं करना था, इसलिए भव्य यशा को फोन करता है।)

भव्य : जयजिनेन्द्र यशा, तुम अच्छी हो और सब अच्छे हैं।

यशा : हाँ, जयजिनेन्द्र, आप अच्छे हैं आपने भोजन कर लिया, आपका स्वास्थ्य अच्छा है।

भव्य : हाँ, सब अच्छा है लेकिन माँ का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, वह बिस्तर से उठ भी नहीं पा रही हैं, भाभी को भोजन नहीं बनाना है, इसलिए तुम जल्दी आ जाओ। आज भी भोजन मुझे ही बनाना पड़ा। मैं तो भोजन बनाते-बनाते हैरान हो गया।

यशा : कुछ नहीं, दो दिन के बाद तो भाभी भोजन बनाने ही लग जाएँगी। मैं आऊँगी तो भी रात के पहले तो वैसे ही नहीं पहुँच पाऊँगी।

भव्य : यशा, तुम तो जल्दी सबसे पहली गाड़ी से ही आ जाओ। नहीं तो बड़े भैया से कहो गाड़ी से छोड़ जाए ताकि तुम थोड़ा माँ को भी देख लोगी और भोजन आदि की समस्या भी सुलझ जायेगी।

यशा : अभी मुझे 10 ही दिन हुए हैं यहाँ आए। मैं इतनी जल्दी नहीं आ रही। मम्मी की तबीयत तो वैसे ही जब कभी

खराब होती ही रहती है, दो-चार दिन में ठीक हो जायेगी।

कुन्दलता : बेटी, किसका फोन आया है, बहुत देर हो गई बातें करते-करते।

यशा : मम्मी गुना से फोन आया था, कह रहे थे माँ की तबीयत ठीक नहीं है, भाभी को भोजन नहीं बनाना है, इसलिए जल्दी आज ही आ जाओ।

कुन्दलता : अच्छा तो बेटी चार बजे वाली गाड़ी से निकल जाओ। पुण्य तुम्हें छोड़ आएगा।

यशा : मम्मी, मैंने तो मना कर दिया कि मैं नहीं आ रही। कितने महिनों के बाद तो मैं यहाँ आई और अभी तो आए दस दिन ही तो हुए हैं, कैसे चली जाऊँ? ये दुनिया के काम तो चलते ही रहते हैं, कभी कोई बीमार होता है तो कभी कोई जन्मता है कोई नहीं हो तो भी काम चलता है और दस व्यक्ति काम करने वाले हों तो भी कोई फरक नहीं पड़ता है।

कुन्दलता : नहीं बेटी, तुम चली जाओ। वक्त पर सहयोग देना ही तो सबसे बड़े प्रेम का चिह्न है और अभी यदि तुम चली जाओगी तो भविष्य में वे तुम्हें भेजेंगे तथा यदि आज नहीं गई और भविष्य में उन्होंने तुम्हें यहाँ नहीं भेजा तो क्या होगा?

(बहुत समझाने पर यशा ससुराल चली जाती है।)

नन्दा : आओ बेटी आ गई। बहुत अच्छा किया तुम आ गई। अब मेरी तबीयत ठीक हो जायेगी। बीमार होने के बाद तो मुझे तुम्हारी बहुत ही याद आ रही थी, अब मन खुश हो गया।

यशा : हाँ मम्मीजी, जैसे ही मुझे समाचार मिला कि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, वहाँ एक क्षण भी मेरा मन नहीं लगा। मैंने मम्मी से कहा-मम्मी, मैं तो अभी की अभी जाऊँगी। मम्मीजी की तबीयत ठीक नहीं.....। मम्मी-पापा-पुण्य आदि मना कर रहे थे तो मैंने कहा - मम्मीजी की तबीयत ठीक होने पर मैं फिर से आ जाऊँगी लेकिन आज तो मैं अवश्य जाऊँगी।

नन्दा : हाँ बेटी, मम्मी-पापा भी मना नहीं करते, लेकिन रुकने के लिए दो-चार बार कहना तो उनका कर्त्तव्य था।

(भव्य और यशा अपने कमरे में हैं, यशा बहुत गुस्से में है।)

भव्य : यशा, आज यदि तू नहीं आती तो जिन्दगी में, मैं तुम्हें कभी भी जबलपुर नहीं भेजता।

यशा : (रोष से) हाँ, जब भी मैं जबलपुर जाती हूँ, यहाँ कुछ-न - कुछ हो ही जाता है। आज तक मैं कभी 15-20 दिन शान्ति से रह ही नहीं पाई....।

भव्य : इसमें क्या बात है? अपने घर के काम छोड़कर दूसरे के यहाँ ज्यादा दिन रहना कोई अच्छी बात तो नहीं है। वैसे महिलाएँ तो अपने घर में ही शोभा देती हैं।

यशा : इसका अर्थ तो यह हुआ कि मैं मम्मी, मामा, मौसी आदि किसी के यहाँ कभी जा ही नहीं सकती हूँ, उनके यहाँ कुछ दिन रुक ही नहीं सकती।

भव्य : मैंने ये कब कहा कि तुम नहीं जा सकती। अपने रिश्तेदारों के यहाँ रुक नहीं सकती। मैंने तो यह कहा कि समय पर जब आवश्यकता हो वहाँ पर भी रुको और अपने घर में आवश्यकता पड़े तो शीघ्र ही लौट आओ।

यशा : आपको तो बस अपने रिश्तेदार दिखते हैं। मेरे भाई, भतीजे, बहिन तो जैसे आपके कुछ लगते ही नहीं हैं। उस दिन भी मैंने आपसे कहा था, मेरी बहिन को ले चलते हैं तो फट से मना कर दिया। उस दिन मैंने भतीजे के लिए मात्र 150 रुपये का एक जींस खरीदने को कहा–आपने मना कर दिया। इससे तो ऐसा लगता है कि मैं आपके रिश्तेदारों का खूब सम्मान करूँ, उनके आगे-पीछे फिरूँ, उनके लिए हजारों रुपये खर्च कर दूँ और आप मेरे रिश्तेदारों के लिए कुछ भी नहीं करें, एक पैसा भी खर्च नहीं करें।

भव्य : अरे यशा! तुम तो हर बात का उल्टा ही अर्थ लेती हो। मैंने सौम्या को साथ ले जाने के लिए कब मना किया था, मैंने तो कहा था कि अभी यशोमती को ले चलते हैं और कभी जाएँगे तो सौम्या को ले चलेंगे और शौर्य के लिए कपड़े खरीदने को भी कब मना किया। मैंने तो यह कहा था कि अभी शौर्य छोटा है, उसके लिए अभी इतने महंगे कपड़े खरीदेंगे, कुछ दिनों बाद कपड़े छोटे हो जायेंगे, फिर फेंकने के अलावा उनका कुछ भी उपयोग नहीं होगा। दूसरी बात जींस स्वास्थ्य के लिए भी तो खतरनाक है।

(बहुत देर तक यशा और भव्य के अपने-अपने विचारों की तकरार चलती है, फिर भव्य बात बदल देता है, दोनों सो जाते हैं।)

(कुछ दिन के बाद यशा गर्भवती होती है।)

नन्दा एक दिन आर्यिका संघ के दर्शन करने जाती है, वहाँ एक आर्यिका माताजी के प्रवचन में गर्भस्थ शिशु में

संस्कार डालने की विधि सुनती है, तो वहीं स्टाल से **'संस्कार मंजूषा'** नाम की पुस्तक खरीद लाती है, यशा को देती हुई –

नन्दा : लो बेटी यशा! मैं तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छी पुस्तक लाई हूँ। अब तुम माँ बनने वाली हो। गर्भस्थ शिशु को किस प्रकार संस्कारित करना चाहिए। इसमें उन सबका बहुत अच्छी तरह से वर्णन है, तुम इसे पढ़कर बच्चे को संस्कारित कर सकती हो। लो इसे तुम भी पढ़ना और भव्य को भी सुनाना। (यशा पुस्तक देखकर खुश हो जाती है पुस्तक लेती हुई) लाओ मम्मीजी मैं इसे जरूर पढ़ूँगी और उनको भी सुनाऊँगी। **'संस्कार मञ्जूषा'** पढ़ने के बाद उसके व्यवहार में काफी परिवर्तन आता है, लेकिन वह मात्र बच्चा होने के पहले तक बच्चा होने के बाद.....)

नन्दा : यशा! मुन्ना को ज्यादा कपड़े नहीं पहनाया कर और ऊनी कपड़े तो बिल्कुल नहीं पहनाया कर पहली सर्दी में गरम कपड़े पहनाने से शरीर में सर्दी को सहन करने की शक्ति समाप्त हो जाती है।

यशा : मम्मी, आजकल यदि बच्चों को ऊनी कपड़े नहीं पहनाओ तो बच्चे जल्दी से बीमार हो जाते हैं। दीदी भी तो बच्चों को ऊनी कपड़े पहनाती ही हैं और भाभीजी ने तो छोटी वाली बच्ची को दो-तीन महिने की उम्र में ही ऊनी कपड़े पहना दिए थे। (एक दिन नन्दा और भाविता बैठी-बैठी बातें कर रही थीं)

यशोमती : मम्मी, आप तो जब देखो भाभी की प्रशंसा ही करती रहती हो। उस दिन भाभी आपसे कितनी जोर-जोर से

बोल रही थीं, फिर भी आपने उसको कुछ नहीं कहा।

नन्दा : बेटी, भाभी भी तो तेरे जैसी ही मेरी बेटी है, जैसे तेरे से गलती हो जाने पर मैं तुझे नहीं डाँटती उसी प्रकार उससे भी गलती हो गई तो उसे माफ कर ही देना चाहिए।

यशोमती : मम्मी आप तो बहुत सीधी हो यदि आप भाभी को ऐसे ही माफ करती रही तो आगे भाभी आपके साथ कैसा-कैसा व्यवहार करने लगेगी। आपने कभी सोचा है।

नन्दा : हाँ, बेटी तेरा कहना सही है, लेकिन अपना व्यवहार अच्छा हो तो धीरे-धीरे सामने वाले का व्यवहार भी अपने आप सुधर जाता है फिर किसी को अच्छा बनाना है तो गम खाना बहुत आवश्यक है।

यशोमती : वा मम्मी, आप तो अभी भी गम खाती रहो और फिर वृद्धावस्था में तो गम खाने के अलावा आदमी के पास बचता ही क्या है?

नन्दा : कुछ नहीं यशोमती, मुझे तो विश्वास है कि यशा बहुत अच्छी है, वो ही वृद्धावस्था में मेरी सेवा करेगी। मैं मानती हूँ कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे यशा जैसी समझदार बहू मिली है।

(बीच में ही यशा बाहर खड़ी-खड़ी कुछ सुनती है फिर कमरे में प्रवेश करती है।)

यशा : लो मम्मीजी, अपने मुन्ने को सम्हालो, पूरे दिन दादी के अलावा इसे तो कुछ चाहिए ही नहीं। एक पल भी दादी इधर-उधर हुई तो बस रोना शुरु हो गया।

नन्दा : आओ, बेटा आओ कहती हुई बच्चे को छाती से चिपका लेती है। रोओ नहीं बेटा, आओ मेरी गोदी में बैठ जाओ।

मुन्ना : (रोते हुए) दादी, मम्मी बहुत खराब हैं, मम्मी ने मुझे

मारा है, मैं अब मम्मी के पास नहीं जाऊँगा, मैं आपके पास ही रहूँगा।

नन्दा : नहीं बेटा, ऐसा नहीं कहते, मम्मी बहुत अच्छी हैं, देखो मम्मी तुम्हें दूध पिलाती हैं न, मम्मी तुम्हें लाड़ करती हैं ना। तुम मेरे पास भी रहना और मम्मी के पास भी।

मुन्ना : नहीं दादी, मम्मी खराब हैं, मैं मम्मी के पास नहीं जाऊँगा।

नन्दा : नहीं बेटा, माँ कभी खराब नहीं होती हैं। संसार में माँ सबसे अच्छी होती है। जिसकी माँ नहीं होती उसके जीवन में कुछ नहीं होता।

मुन्ना : अच्छा दादी! मम्मी बहुत अच्छी है। मैं मम्मी के पास भी जाऊँगा और आपके पास भी रहूँगा। (ऐसा कहते हुए मुन्ना मम्मी से लिपट जाता है।)

(यशा बेटे को लिपटा देख गद्‌गद् हो जाती है।)

(उस दिन सास के मुख से प्रशंसा एवं आज मुन्ने से माँ के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने वाली बात को सुनकर यशा की धारणा थोड़ी बदलती है, उसके दिल में सास के प्रति थोड़ा प्रेम उत्पन्न होने लगता है।)

यशा : (भव्य से) अपन कितने दिनों से घूमने नहीं गए हैं। अबकी बार अपन ऊटी घूमने चलेंगे।

भव्य : यशा, तुम्हें क्या लगता है कहने में, घूमने चलेंगे तो 5-10 हजार रुपये तो मुझे ही खर्च करने पड़ेंगे।

यशा : हाँ, आपको तो जब देखो पैसा ही पैसा दिखता है आखिर अपन शौक-मौज नहीं करेंगे तो पैसा है किसके लिए, पूरे दिन आप मेहनत करके पैसा क्यों कमा रहे हैं?

भव्य : क्या मैं मात्र घूमने में पैसा बर्बाद करने के लिए पैसा

कमा रहा हूँ। मैं तो दान देने, तीर्थ यात्रा करने और आवश्यकता पड़ने पर किसी की सहायता करने के लिए मेहनत करता हूँ।

यशा : नहीं, कुछ भी हो आप किसी के लिए कमाई कर रहे हो अबकी बार तो अपने को घूमने चलना ही है, इस बार मेरे कहने या मेरी जिद्व से ही सही, आपको घूमने चलना ही पड़ेगा।

(इस प्रकार दोनों बातें करते-करते सो जाते हैं।)

भव्य : मम्मी, कल तो यशा बहुत ही जिद्व कर रही थी कि अबकी बार तो ऊटी घूमने चलना ही पड़ेगा।

नन्दा : तो क्या तुम लोग ऊटी जा रहे हो?

भव्य : नहीं, मम्मी! मैंने तो स्पष्ट मना कर दिया कि मैं किसी भी हालत में 8-10 हजार रुपये बर्बाद नहीं कर सकता।

नन्दा : बेटा, क्या हो गया, एक बार घूम आओ तो, बात पैसे की है तो वहीं से गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान् के दर्शन भी कर आना और आसपास के क्षेत्रों की वंदना भी कर लेना ताकि पैसे का पूरा सार निकल आएगा। तीर्थ यात्रा भी हो जायेगी और घूमना भी हो जाएगा।

भव्य : माँ, आप तो सच में बहुत दिमाग वाली हो, अपनी बहू की इच्छा पूरी करने के लिए क्या युक्ति लगाई है आपने। मुझे तीर्थयात्रा का ऐसा लोभ बताया कि गोम्मटेश्वर का नाम सुनकर मेरा मन पिघल ही गया।

(नन्दा को भव्य की बातों से समझ में आ गया कि भव्य घूमने चला जाएगा)

नन्दा : यशा, तैयारी कर लो जाने की, लेकिन ध्यान रखना, वहाँ घूमने के चक्कर में ही मत पड़ी रहना। भगवान् के

दर्शन भी अच्छी तरह करना और सभी क्षेत्रों की वंदना उत्साह पूर्वक करना, नहीं तो भव्य नाराज हो जाएगा। यदि तुमने धर्म में उत्साह नहीं दिखाया तो वो कभी घूमने नहीं ले जाएगा।

यशा : अच्छा तो मम्मी वो यात्रा करने जा रहे हैं, लेकिन मुझे समझाने के लिए कह रहे हैं कि अपन घूमने चल रहे हैं।

नन्दा : बेटी, उसके सामने ऐसा मत कह देना, नहीं तो वो बिल्कुल घूमने नहीं ले जाएगा, केवल यात्रा करके लौट आयेगा। बड़ी मुश्किल से जाने के लिए तैयार किया है।

यशा : ठीक है मम्मीजी, मैं उनके सामने इन बातों का जिक्र ही नहीं करूँगी।

(नन्दा 7-8 दिन का नास्ता तैयार कर देती है। भव्य और यशा ऊटी घूमने के लिए रवाना हो जाते हैं।)

यशा : (ऊटी पहुँचकर)कितना मनोरम दृश्य है, ऐसा लग रहा है कि चार-आठ दिन तो कम से कम यहीं रुककर घूमने का आनंद लें।

भव्य : भले ही कितना अच्छा लग रहा हो यशा! अपने को बाहुबली भगवान् के दर्शन करने भी तो चलना है, यहाँ की अपेक्षा तो वहीं रुकेंगे तो थोड़ा धर्मध्यान भी होगा।

यशा : अरे भगवान्! आप तो वास्तव में अपने मम्मी-पापा जैसे ही पुराने जमाने की बातें करते हैं, आप में भी पुराने लोगों जैसी ही रुढ़िवादिता है। बस, जब देखो धर्म-धर्म की रटना सी लगाए रहते हैं। अभी इस भरी जवानी में जब ऐशो-आराम करने के दिन हैं, भोगों का आनंद तो इसी उम्र में लिया जा सकता है, बूढ़े होने के बाद जब इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं, शरीर में शक्ति समाप्त हो

जाती है, तब आदमी को धर्म करना चाहिए ताकि जीवन में भोग का आनंद आ जावे और वृद्धावस्था में धर्म करके जीवन को सार्थक भी किया जा सके।

भव्य : वा यशा वा, तूने तो बड़े अच्छे प्रवचन सुनाये। इतने अच्छे प्रवचन तुझे कौन से गुरु ने सिखाए हैं। तुझे इतनी अच्छी बातें सिखाने वाला तो कोई विशेष गुरु अवश्य ही होगा। एक बार मुझे भी उनसे मिला दो शायद तेरी और उसकी दोनों की अकल ठिकाने आ जाए।

यशा : इन बातों को बताने के लिए गुरु की आवश्यकता ही कहाँ है? ये बातें तो कोई अनपढ़ गवारूँ या बजारू अंगूठा छाप व्यक्ति भी बता सकता है।

भव्य : अच्छा तो एक बात बताओ क्या तुम यह गारंटी ले सकती हो कि अपन वृद्ध अवश्य होवेंगे?

यशा : इसकी गारंटी तो आज तक न कोई ले पाया और न ही कोई ले ही पाएगा, क्योंकि व्यक्ति दुनिया का हर काम कर सकता है, हर बीमारी की औषधि बना सकता है, खा सकता है, लेकिन मौत से बचने की कोई दवाई ही नहीं और न ऐसी ही कोई दवाई है, जो वृद्धावस्था से बचा सके।

भव्य : बस, मैं तेरे मुँह से यही सुनना चाह रहा था। यदि हमारी मौत की कोई गारंटी नहीं है और यह भी निश्चित नहीं है कि हमारी वृद्धावस्था पक्का आयेगी तो हमें जल्दी से जल्दी धर्म कर ही लेना चाहिए ताकि हमारी मनुष्य पर्याय प्राप्त करना सफल हो जावे।

यशा : मैं भी तो यही कह रही थी कि जब तक शरीर में शक्ति है पास में पैसा है, भोग कर लो मनुष्य पर्याय बार-बार

थोड़े ही मिलती है।

इस प्रकार बातें करते-करते सब सामान जम जाता है दोनों ही समान उठाकर बस स्टैण्ड पर पहुँच जाते हैं।

(गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान् के दर्शन करके)

यशा : वाह, वाह आज मेरा जीवन धन्य हो गया। आज मेरा जीवन धन्य हो गया। (इस प्रकार बोलते-बोलते उसकी आँखों से आनंदाश्रु बरसने लगते हैं।)

यशा : आज भगवान् बाहुबली स्वामी के दर्शन करके कैसा लगा?

भव्य : तुम्हें कैसा लगा?

यशा : मुझे कैसा लगा पूछो नहीं, मुझे तो ऐसा लगा कि जैसे गूंगा गुड़ को खाकर भी स्वाद नहीं बता सकता है, उसी प्रकार मैं भगवान् के दर्शन से प्राप्त हुए आनंद को बता नहीं सकती। आज तो मुझे ऐसा लग रहा था कि इन भगवान् को छोड़कर कहीं जाऊँ ही नहीं। मैं तो दर्शन करके सब कुछ भूल गई। अब समझ में आया कि आपको भगवान् के प्रति इतना आकर्षण क्यों है?

भव्य : मैंने भी आज पहली बार बाहुबली भगवान् के दर्शन किए तो ऐसा लगा कि फालतू ही 3-4 दिन घूमने में खराब कर दिए। ऊटी के स्थान पर यहाँ रुकते तो कितना आनंद आता।

यशा : हाँ, मुझे भी बहुत पश्चाताप हो रहा था कि मेरे कारण आपको भी इतने अच्छे क्षेत्र पर रुकने को नहीं मिला। मेरे साथ आपका भी टाइम खराब हुआ। मैंने तो आज भगवान् के सामने नियम ही ले लिया कि अब मैं कभी आपके किसी भी धर्मध्यान में विघ्न नहीं डालूँगी।

भव्य : यशा, तूने सच में नियम ले लिया कि मजाक कर रही हो।

यशा : नहीं, नहीं मैंने आज सच में नियम ले लिया है।

भव्य : फिर तो मेरा घूमने आना बहुत सार्थक हो गया।

(इस प्रकार बातें करते हुए आस-पास की वंदना के लिए रवाना हो जाते हैं)

(धर्मस्थल, मूडबद्री, वरांग आदि की वंदना करके घर लौट आते हैं।)

यशा : (नन्दा के चरण स्पर्श करती हुई) मम्मी आपने तो मुझे इतने अच्छे स्थान पर भेजा कि मैं तो बाहुबली भगवान् के दर्शन करके गद्‌गद् हो गई। मैंने तो वहीं पर आपको लाखों धन्यवाद दिए और मन ही मन में सोचा कि मैं कितनी किस्मतवाली हूँ कि मुझे आप जैसी मम्मी मिली। आपने मेरी घूमने की भावनाओं को भी रख दिया और साथ ही साथ इतने अच्छे भगवान् के दर्शन करवा दिए कि मैं अपने जीवन में उस दिन को भूल ही नहीं सकती। जिस दिन मैंने दर्शन किए। मुझे तो बाहुबली भगवान् के वहाँ जाते ही ऐसा लगा कि शायद स्वर्ग में भी इतना आनंद नहीं आता होगा, जितना आनंद आज मुझे यहाँ आ रहा है।

नन्दा : यशा, तुम्हें तो गोमटेश बाहुबली भगवान् के दर्शन हो गए और मैं तो रह ही गई। मुझे तो कब से दर्शन करने थे, लेकिन वर्षों हो गए कुछ योग ही नहीं बन रहा है और तुम कितनी भाग्यशाली हो कि तुम्हें बिना चाहे ही दर्शन हो गए।

यशा : हाँ, मम्मीजी आपकी कृपा से ही मुझे दर्शन हो गए,

अन्यथा मुझे तो दर्शन होने की कोई संभावना ही नहीं थी, क्योंकि मुझे तो भगवान् के दर्शन, तीर्थ-यात्रा आदि के प्रति कोई आकर्षण ही नहीं था। मम्मीजी अब आप भी जल्दी ही गोम्मटेश्वर की वंदना करने चली जाना।

(इस प्रकार घर में कई दिनों तक गोम्मटेश्वर की चर्चा चलती रही, नन्दा, यशा, यशोमती आदि सब के दिन आनंद से बीतने लगे।)

(एक बार गुना में मुनि संघ के आगमन की चर्चा होने लगी चातुर्मास की भूमिका भी बनने लगी।)

जय : मम्मी अबकी बार तो अपने यहाँ मुनि संघ के चातुर्मास होने की पूरी-पूरी संभावना है।

नन्दा : बेटा! मुनि संघ कहाँ से आ रहा है। संघ में कितने मुनि महाराज हैं, क्या संघ में आर्यिकाएँ भी हैं। क्या संघ में ब्रह्मचारी भैया-ब्रह्मचारिणी दीदियाँ भी हैं?

जय : मम्मी, मुनि संघ में पाँच मुनिराज हैं तथा एक-दो भैया हैं।

नन्दा : संघ कब तक अपने नगर में आ जाएगा।

जय : मम्मी, अभी तो एक-दो बार कमेटी के लोग लेने गए थे। बड़े महाराजजी ने आचार्य महाराज से आशीर्वाद लाने के लिए कहा है सो शायद लोग आचार्य महाराज के चरणों में आशीर्वाद लेने जा रहे हैं।

यशा : क्या, भैया आप भी आचार्यश्री के पास जाएँगे?

जय : नहीं भाभी, मैं तो नहीं जा रहा हूँ, लेकिन बड़े भैया जाने की बोल रहे थे।

यशा : क्या कोई लेडिज भी जा रही हैं। यदि जा रही हों तो मैं और भाभी भी दर्शन कर आते।

जय : भाभी, मेरे अनुमान से अभी तो कोई लेडिज नहीं जा रही हैं, क्योंकि आचार्यश्री का विहार चल रहा है। रास्ते में पता नहीं कहाँ मिले?

(कुछ दिनों के बाद यश भी आचार्य श्री के दर्शन करके आ जाता है।)

नन्दा : बेटा यश! क्या आचार्य श्री ने मुनि संघ को अपने यहाँ आने की सम्मति दे दी।

यश : नहीं, मम्मी आचार्य श्री ने कहा है कि आर्यिका संघ के पास जाओ, तुम्हारे यहाँ आर्यिका संघ का चातुर्मास उचित रहेगा।

यशा : तो क्या भाई साहब अपने यहाँ आर्यिका संघ का आना निश्चित हो गया।

यश : हाँ यशा, लगभग निश्चित ही है।

यशा : मम्मीजी! अपने को चातुर्मास में क्या-क्या करना पड़ेगा? मुझे तो आर्यिका संघ से बहुत डर लगता है।

जयिता : यशा, मुझे तो आर्यिका संघ से बिल्कुल डर नहीं लगता। हम तो बचपन से ही आर्यिकाओं के साथ खूब रहे हैं। यशा तुम्हारे जबलपुर में तो बहुत साधु आते हैं और आर्यिका संघ के तो बहुत चातुर्मास हुए हैं तो क्या तू आर्यिकाओं के पास कभी नहीं गई।

यशा : भाभी, मैं भी जब छोटी थी, माताजी के पास बहुत जाती थी, लेकिन.....।

नन्दा : यशा फिर क्या हो गया? क्या तुम्हें नजर लग गयी या समझदारी आ गई। जो जाना बंद कर दिया।

(यशा चुपचाप रह जाती है कुछ नहीं बोलती है, तभी सेठ नन्दकुमारजी आ जाते हैं।)

नन्दकुमार : अरे, आज तो सास-बहुएँ मिलकर आर्यिका संघ के आने की चर्चा कर रहीं हैं। क्या-क्या प्लान बन गए चातुर्मास के लिए।

नन्दा : कुछ नहीं, क्या आर्यिका संघ का चातुर्मास पक्का ही हो गया?

कुन्दकुमार : हाँ, जबलपुर से भी फोन आया था कि अपने यहाँ आर्यिका संघ आ रहा है।

(आर्यिका संघ आ जाता है, चातुर्मास की स्थापना हो जाती है, सेठ नन्दकुमार के यहाँ पर भी पड़गाहन की तैयारियाँ होने लगती हैं, लेकिन यशा इसमें कोई इन्ट्रेस्ट नहीं लेती है। एक दिन.....)

नन्दा : बेटी, यशा तुम भी सोले के कपड़े पहन लो।

यशा : (बहाना बनाती है) मम्मीजी मैं सोला पहन लूँगी तो मुन्ने को कौन रखेगा? उसको आप या मेरे में से एक तो होना जरूरी है।

नन्दा : बेटी, मुन्ना तो श्यामू के पास भी रह जाता है। एक-डेढ़ घंटा तो वो ही मुन्ने को रख लेगा। तू सबसे पहले दो-चार ग्रास देकर मुन्ने को ले लेना।

(यशा नन्दा की बात को सुनी-अनसुनी कर देती है।)

(सेठ-सेठानी, यश, भव्य, जय, जयिता आदि सभी सोला पहन कर पड़गाहन के लिए खड़े होते हैं, एक आर्यिका का आहार होता है, आहार के बाद.....)

आर्यिका : सेठानी, तुम्हारे तीन बेटे हैं, लेकिन बहू तो केवल एक ही दिख रही है। क्या दूसरे बच्चों की शादी नहीं हुई है।

नन्दा : माताजी, छोटी बहू का मुन्ना छोटा है इसलिए वह सोला नहीं पहन पाती है।

आर्यिका : क्या छोटी बहू की आहार देने में रुचि नहीं है, हमने तो तुम्हारी छोटी बहू को कभी देखा ही नहीं। क्या वह क्लास आदि में कभी नहीं आती है।

जयिता : जी माता जी, यशा की धर्म में रुचि थोड़ी कम ही है, उसको कितनी बार कपड़े बदलने के लिए कहा लेकिन कुछ न कुछ बहाना बनाकर बात टाल देती है।

नन्दा : नहीं माताजी, ऐसी कोई बात नहीं है, उसका तो आहार देने का बहुत मन रहता है, लेकिन जैसे ही वह कपड़े बदलने का विचार बनाती है, मुन्ना कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य कर देता है।

(इस प्रकार बातें करते हुए सभी मंदिर में पहुँच जाते। माताजी, बड़ी आर्यिका माताजी से नन्दा की शिकायत करती हैं।)

बड़ी आर्यिका: क्यों सेठानी, माताजी क्या कह रहीं, क्या वह सही है।

नन्दा : नहीं माताजी (इशारे से यशा को बताती हुईं।) ये खड़ी मेरी बहू। यदि उसकी रुचि नहीं होती तो वह यहाँ तक कैसे आती?

बड़ी आर्यिका: क्यों यशा, क्या तुम्हें कभी आहार देने का भाव नहीं होता।

यशा : नहीं माताजी, मेरे भाव तो ऐसे होते हैं कि मैं रोज आहार दूँ, लेकिन बच्चा परेशान करता है। मेरे कारण कहीं कोई विघ्न आ जाए तो मुझे बहुत डर लगता है।

बड़ी आर्यिका : सेठानी, यदि यशा पड़गाहन करने खड़ी नहीं हुई तो मैं तो बिल्कुल तुम्हारे यहाँ आहार करने नहीं आऊँगी।

(नन्दा के यहाँ बड़ी माताजी के आहार नहीं हुए शेष सभी के हो गए।)

नन्दा : प्लीज यशा, आज तू सोले के कपड़े पहन ले, नहीं तो

बड़ी माताजी अपने चौके में नहीं आएगी, देख कितने दिन हो गए सब माताजी आ गईं, लेकिन....

(यशा नन्दा के कहने से सोला पहनने लगती है तभी मुन्ना छी-छी करने को कहता है, यशा उसको उठाने लगती है तभी)

श्यामू : भाभीजी, आप नहीं ले जाओ मुन्ने को। मैं ही ले जाऊँगा। आप तो सोला पहन लो अपने यहाँ बड़ी माताजी के आहार होंगे।

यशा : नहीं, नहीं भैया आज इसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है यह बार-बार जा रहा है। वैसे ही अभी थोड़ी देर में मुन्ने को भूख भी लग आएगी तो छूना ही पड़ेगा। अभी इसको दवाई भी खिलाना है।

श्यामू : नहीं, भाभीजी! आप तो सोला पहन लो ये सब मैं कर लूँगा, दवाई बता दो मैं खिला दूँगा। आप वैसे ही सोला नहीं पहनती हैं।

यशा : नहीं, भैया मैं ही कर लूँगी। सोला पहनना इतना कोई जरूरी काम नहीं है, जितना कि बच्चे का अच्छी तरह पालन-पोषण करना आवश्यक है।

भव्य : अच्छा, यशा क्या कह रही हो, सोला पहनना जरूरी नहीं है। अरे! बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के लिए भी सोला पहनना आवश्यक ही नहीं अति आवश्यक है।

(यशा चुपचाप सोला पहन लेती है योग से उसी दिन बड़ी माताजी का पड़गाहन हो जाता है, बड़ी माताजी के वात्सल्य से यशा बहुत प्रभावित होती है। आहार देने से यशा के भावों में परिवर्तन आता है। यशा तीनों टाइम माताजी के पास जाने लगती है।)

भव्य : मम्मी, आजकल यशा कहाँ रहती है, मैं तो जब भी घर में आता हूँ यशा दिखती ही नहीं।

नन्दा : बेटा, आजकल यशा पर बड़ी माताजी का रंग चढ़ गया है। बस, थोड़ी-सी फ्री हुई कि चली माताजी के पास। न मुन्ना की चिन्ता और न ही कुछ खाने-पीने का होश है। जब देखो माताजी-माताजी करती रहती है। मात्र माताजी के अलावा किसी की बात ही नहीं करती है।

भव्य : अच्छा तो हुआ मम्मी, कम से कम थोड़ा धर्म तो करने लगी है। नहीं तो धर्म के नाम से ही सिरदर्द होने लगता था।

यशा : (भव्य से) आप जल्दी भोजन कर लो, मुझे गुरुभक्ति में जाना है और फिर छहढाला की क्लास भी बहुत अच्छी लगती है माताजी बहुत सरल भाषा में समझाती हैं।

भव्य : अच्छा तो आप आजकल क्लास भी सुनने लगी हैं।

यशा : हाँ, मैं तो आपसे भी कहती हूँ कि आप भी हमेशा क्लास में जाया करो। ये दुकान के काम तो जिन्दगी भर लगे ही हैं। थोड़ा कुछ धर्म सुन लेंगे तो अपना भी कल्याण हो जायेगा।

भव्य : नहीं, यशा मैं शाम की क्लास में तो नहीं जा सकता। उस समय तो मुझे उधार पैसे तथा आर्डर लेने जाना पड़ता है।

यशा : पैसे और आर्डर लाने का समय तो बदला जा सकता है फिर साढ़े सात बजे तो क्लास पूरी हो ही जाती है। तब तक तो पूरी रात भी नहीं होती है। आप इन कामों के लिए आठ बजे के बाद ही तो जाते हैं इसलिए क्लास में आने में कोई डिफिकल्टी नहीं है।

(यशा के बहुत बार कहने पर भी भव्य क्लास में नहीं

जाता है तो एक दिन यशा रूठ जाती है। भव्य दो-तीन दिन उससे बोलता रहता है लेकिन यशा उसकी बातों को अनसुनी करती रहती है कोई जवाब नहीं देती है।)

भव्य : यशा, दो-तीन दिन हो गए तुम मेरे से क्यों नहीं बोलती हो, मेरी बात को अनसुनी क्यों कर देती हो?
ऐसी क्या बात हो गई, तुम किस बात पर इतनी नाराज हो गई हो। मैंने तो तुम्हें ऐसा कुछ नहीं कहा।

यशा : जब आप मेरी छोटी-सी बात भी नहीं मान सकते तो मेरे खुश रहने से क्या मतलब?

भव्य : यशा, मैंने तेरी कौन-सी बात नहीं मानी, जो तुमने मेरे से बोलना ही बंद कर दिया।

यशा : मैंने आपको कितनी बार कहा क्लास में जाया करो। सुबह नहीं तो शाम। दोनों टाइम न सही कम से कम एक क्लास में तो जा ही सकते हैं।

भव्य : अच्छा बाबा, तुम नाराज मत हो, मैं अब एक टाहम की क्लास में अवश्य जाऊँगा।
(भव्य एक-दो दिन क्लास में जाता है तो उसका इतना मन लगता है कि वह दोनों टाइम क्लास में जाने लगता है।)
(एक बार यशा जबलपुर जाती है, वहाँ पर भी आर्यिका संघ था। यशा वहाँ पर भी अधिक समय तक आर्यिकाओं के पास ही रहती है।)

कुन्दलता : बेटी यशा, आजकल तो तुम बहुत धर्म करने लगी हो। तुम इतने दिन के बाद आई हो, फिर भी तुम्हें मेरे से बात करने तक का भी टाइम नहीं है।

यशा : मम्मी, ऐसी कोई बात नहीं है, मैं कोई विशेष धर्म नहीं

करने लगी हूँ। सोचती हूँ बड़ी दुर्लभता से साधुओं का समागम मिलता है। यदि समागम मिले तो एक क्षण भी नहीं गंवाना चाहिए। फिर आपसे तो कभी भी मिल लेंगे, लेकिन साधु कब मिलते हैं?

कुन्दलता : वा यशा तेरे ऊपर तो माताजी का इतना रंग चढ़ गया कि तू हम लोगों को भूल ही गई।

यशा : मम्मी धर्म के बिना संसार में सार ही क्या है? अपन गृहस्थ हैं, ज्यादा धर्म कर ही कहाँ पाते हैं?

कुन्दकुमार : बेटी यशा, क्या तू आजकल पागल हो गई हो, जब देखो धर्म की रटना लगाए रहती हो।

पुण्य : हाँ, यशा मुझे तो ऐसा लगता है कि तू थोड़े दिन में माताजी ही बन जाएगी।

भावना : हाँ, दीदी भैया बिल्कुल सही कह रहे हैं, अच्छा है आप दीक्षा ले लेंगी तो हमें भी आपके दर्शन करने का, साधुओं के समागम का मौका मिलता रहेगा।

यशा : तुम लोग तो सब हाथ धोकर मेरे पीछे ही पड़ गए हो, मैंने ऐसा क्या धर्म कर लिया कि मैं तुम लोगों को माताजी दिखने लगी हूँ।

(सब हँसते हैं, इसी प्रकार की चर्चा के साथ दिन बीत जाते हैं, यशा गुना आ जाती है।)

नन्दा : यशा उधर तुम जबलपुर गई थी और इधर मैं भी बनारस चली गई।

यशा : हाँ, मम्मी अबकि बार तो आप भी मामा के यहाँ बहुत रुकी, आपका भी मन बहुत लगा। क्या मामाजी, नानाजी, नानीजी सब अच्छे हैं, क्या वहाँ भी कोई साधु संघ है।

नन्दा : हाँ, वहाँ भी एक मुनि संघ है, जिसमें 30-40 मुनिराज

हैं, तभी तो मेरा इतने दिन मन लग गया। पिताजी, भैया तो और भी बहुत रोक रहे थे, लेकिन घर पर जयिता अकेली थी, तुम्हारे यहाँ भी माताजी थीं, सो मुझे लग रहा था कि तुम्हारा भी मन वहाँ बहुत लग रहा होगा, तुम भी बहुत दिनों तक जबलपुर रुकोगी इसलिए मैं लौट आई।

यशा : महाराजजी, कौन-कौन सी क्लास लगा रहे हैं, वहाँ इतना बड़ा संघ है तो बहुत ही आनंद आ रहा होगा।

नन्दा : हाँ, यशा वहाँ बहुत आनंद आ रहा है मैं वहाँ से तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छा ग्रन्थ लायी हूँ।

यशा : मम्मी! आप कौन-सा ग्रन्थ लायी हो।

नन्दा : बेटी, मैं श्रेणिक पुराण लाई हूँ, यदि तुम पूरा पढ़ लोगी तो तुम्हें एक सोने की अंगूठी इनाम में दूँगी और जयिता तुम भी इसको पढ़ना तुम्हें भी सोने की अंगूठी मिलेगी।

जयिता : मम्मी ग्रन्थ पढ़ने के लिए सोने की अंगूठी की आवश्यकता ही कहाँ है? ग्रन्थ का अध्ययन करने से तो अपनी ही आत्मा का कल्याण होता है।

नन्दा : हाँ, जयिता बात तो सही है लेकिन शास्त्र पढ़ने में बहुत कम लोगों का मन लगता है।

यशा : हाँ, मम्मीजी मेरा तो शास्त्र पढ़ने में बिल्कुल ही मन नहीं लगता। प्रवचन सुनना तो फिर भी अच्छा लगता है। थोड़ा समझ में भी आता है, लेकिन शास्त्र तो बिल्कुल ही समझ में नहीं आता है, मैंने तो आज तक कोई शास्त्र पढ़ा ही नहीं है।

नन्दा : यशा इसलिए तो मैं कह रही हूँ कि तुम ये श्रेणिक चरित्र पढ़ लोगी तो सोने की अंगूठी अवश्य दूँगी। तुम नहीं

लोगी तो भी दूँगी। लो आज से ही पढ़ना शुरु कर देना। बहुत अच्छा शास्त्र है मेरा तो इसमें बहुत मन लगता है। मैंने तो इसका तीन-चार बार स्वाध्याय कर लिया तो भी लगता है कि इसे और पढ़ूँ।

यशा : अच्छा मम्मीजी, मैं भी इसको पढ़ने की कोशिश करूँगी। (यशा शास्त्र पढ़ना शुरु कर देती है, उसे बहुत अच्छा लगता है, वह भव्य से कहती है।)

यशा : आपको पता है, मैं आजकल कौन-सा नया काम कर रही हूँ।

भव्य : मुझे क्या पता, तुम कौन-सा नया काम रह रही हो। मुझे तो लगता है कि तुम आजकल जब देखो कुछ पढ़ती रहती हो।

यशा : बस वो ही तो नया काम है श्रेणिक चरित्र का स्वाध्याय कर रही हूँ। मम्मीजी, अबकी बार बनारस से श्रेणिक चरित्र ग्रन्थ लाईं थीं। बहुत अच्छा लग रहा है। मैं इतने दिन सोचती थी कि शास्त्र तो बहुत कठिन होते हैं। अपने जैसे अल्प ज्ञानियों को शास्त्र समझ में ही नहीं आते होंगे, लेकिन.....।

भव्य : तो क्या तुम्हें श्रेणिक चरित्र पूरा समझ में आ रहा है?

यशा : हाँ, मुझे तो ऐसा लगता है कि पूरे दिन उसे ही पढ़ती रहूँ। बहुत सरल ग्रन्थ है। एक-एक बात इतनी अच्छी लिखी है कि अपने जीवन में उतार लो तो सुख ही सुख बरसने लगे। झगड़े सब समाप्त हो जावे।

भव्य : तो तुमने क्या-क्या पढ़ा है, उसमें से थोड़ा-सा बताओ।

यश : बौद्धधर्मी राजा श्रेणिक को उनकी रानी चेलना ने कितनी अच्छी युक्तियों से जैनधर्म का दृढ़ श्रद्धानी बना दिया

और भगवान् महावीर स्वामी के समवशरण में ले जाकर क्षायिक सम्यग्दृष्टि बना दिया तथा अब तो यह भी निश्चित हो गया है कि वे भविष्य में तीर्थंकर बनेंगे।

भव्य : कौन! बौद्धमती राजा श्रेणिक तीर्थंकर बनेंगे?

यशा : हाँ, वे तीर्थंकर बनेंगे इस सबका श्रेय रानी चेलना को ही है।

भव्य : अच्छा तो तुम्हें ये बातें इसलिए याद रही कि आप भी चेलना रानी हैं।

यशा : नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है, आप तो पहले ही धर्मात्मा हैं, आपको मैं क्या धर्मात्मा बनाऊँ?

(यशा सास, देवर, जेठानी आदि को तथा यदि जबलपुर से फोन आवे तो भी मम्मी आदि को भी श्रेणिक चरित्र की बातें बताती रहती है।)

नन्दा : (सोने की अंगूठी देती हुई) लो यशा, ये अंगूठी लो तुमने श्रेणिक चरित्र पढ़ लिया।

यशा : नहीं, मम्मी मुझे श्रेणिक चरित्र पढ़ने से इतना मिल गया कि उसके सामने इस अंगूठी का मूल्य ही क्या है? इस ग्रन्थ को पढ़ने से मुझे इतनी अमूल्य चीज मिल गई जिसके बराबर संसार में कोई वस्तु ही नहीं होगी।

नन्दा : हाँ, यशा बात तो सही है लेकिन तुम्हें अंगूठी तो लेनी ही होगी। इस प्रकार कहते हुए अंगूठी यशा को दे देती है यशा नन्दा का सम्मान रखते हुए अंगूठी ले लेती है।

(अब तो यशा पुराण ग्रन्थों का स्वाध्याय करती रहती है उसका स्वाध्याय करने में थोड़ा-थोड़ा मन भी लगने लगता है।)

(घर में जय की शादी होती है, उसमें यशा नेलपॉलिस,

लिपिस्टक आदि लगाकर तैयार होती है। सभी मेहमान भी घर में आते हैं।)

यशोमति : अरे भाभी यशा! तुमने और नेलपॉलिस लगा ली, ओहो! इसमें तो मछली का तेल डलता है, अब तुम इन्हीं हाथों से भोजन करोगी।

जयिता : दीदी, देखो यशा के लिप्सों को क्या सुन्दर लग रहे हैं मानो कोई हीरोइन ही हो।
(सब ठहाका लगाकर हँसते हैं।)

जय : बिल्कुल सच में भाभी, छोटी भाभी तो कहीं भी हीरोइन से कम नहीं लग रही हैं।

नन्दा : (जोर से) क्यों रे सब मिलकर क्यों यशा की हँसी कर रहे हो, कौन यशा नेलपॉलिस लगाकर मंदिर जा रही है। शादी-ब्याह में तो शृंगार करना ही पड़ता है।

भव्य : मम्मी, क्या यशा की शादी हो रही है या यशा के बेटे की, जो यशा को नेलपॉलिस लगाने की आवश्यकता पड़ गई। फिर ये लिपिस्टक तो बिल्कुल ओंठ हिलते ही मुँह में जाती है। लिपिस्टिक के साथ आपको पता है मम्मी, बन्दर का खून भी यशा के मुँह में जाता ही होगा।

नन्दा : हाँ रे, भव्य, तेरी बात पूरी सौ प्रतिशत सही है, लेकिन यशा अभी बच्ची है। उसके खाने-खेलने के दिन हैं, फिर जय यशा का इकलौता देवर जो है, उसकी शादी में भी वह शृंगार नहीं करेगी तो कब करेगी।

भव्य : क्या मम्मी, इन माँसाहारी सौन्दर्य प्रसाधनों से ही शृंगार होता है, व्यक्ति की सुन्दरता बढ़ती है, मेंहदी लगाकर भी तो नाखूनों को सुन्दर बनाया जा सकता है।
(यशा फनककर एक तरफ चली जाती है।)

नन्दा : चलो छोड़ो, भव्य इन बातों को, कहीं अभी रंग में भंग नहीं हो जावे। मैं समझा दूँगी यशा को। वह भी थोड़ी उम्र ढलने पर ये सब शृंगार छोड़ देगी।
(यशा और भव्य अपने कमरे में बातें कर रहे हैं।)

यशा : क्या आपको मेरा शृंगार अच्छा नहीं लगता, क्या मैं जब नेलपॉलिस आदि लगाकर तैयार होती हूँ तो सुन्दर नहीं लगती हूँ?

भव्य : हाँ, यशा शृंगार करने पर तू सुन्दर तो लगती हो लेकिन जैसे ही मैं तुम्हारी लिपिस्टिक देखता हूँ मेरी आँखों के सामने उन बन्दरों की हत्या झलकने लगती है। अपन जैन हैं। साधु-सन्तों के भक्तों में आते हैं, धर्मात्माओं में अपना नाम है। फिर भी यदि अपन ऐसे हिंसात्मक शृंगार करेंगे तो क्या उचित लगेगा? क्या सब लोग हमारे ऊपर अंगुली नहीं उठाएँगे।

यशा : कोई साधु का भक्त बन जावे, मंदिर जाने लगे तो क्या अपने जीवन का आनंद नहीं ले सकता है, क्या वह अपने घर में ही साधु जैसा वैरागी हो जावे?

भव्य : मैं ऐसा कुछ नहीं कह रहा हूँ यशा! मैं तो यह कह रहा हूँ कि अहिंसात्मक साधनों से भी तो शृंगार किया जा सकता है। फिर शृंगार से ही तो कोई व्यक्तित्व नहीं बनता है। व्यक्तित्व तो अपने अच्छे कार्यों पर आधारित होता है।

यशा : अच्छा तो ठीक है आप मुझे पूरे शाकाहारी सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्रियाँ लाकर देना, मैं इन सब डिब्बियों को तत्काल फेंक दूँगी।

भव्य : मैं तुम्हारे लिए लिपिस्टिक, नेलपॉलिस लाऊँगा या नहीं

लाऊँगा। लेकिन पहले बड़ी माताजी से पूँछ जरूर लूँगा कि माताजी! क्या मैं इसको नेलपॉलिस आदि लाकर दे दूँ। यदि माताजी हाँ कह देगी तो अवश्य ही प्रत्येक चीज की पाँच-पाँच डिब्बियाँ एक साथ लाकर दूँगा।

(जय की शादी हो जाती है उसकी पत्नी का आलू-प्याज आदि के बिना भोजन ही नहीं होता है एक दिन आलू टमाटर की सब्जी बनती है।)

श्रेयसी : यशा भाभी जी, आज तो आलू-टमाटर की सब्जी बहुत अच्छी बनी है क्या आप भी आलू नहीं खाती हैं?

यशा : श्रेयसी! मेरे आलू का त्याग तो नहीं है, लेकिन मुझे आलू की सब्जी भाती नहीं है।

श्रेयसी : अकेले आलू की सब्जी अच्छी नहीं लगती, लेकिन उसके साथ टमाटर मिल जावे तो सब्जी बहुत स्वादिष्ट लगती है। एक बार खाओगी तो खाती ही रह जाओगी।

यशा : (बहाना बनाती हुई) श्रेयसी मेरा मन तो नहीं है कि मैं आलू की सब्जी खाऊँ। लेकिन तुम कह रही हो तो तुम्हारी बात टाल भी नहीं सकती।

(ऐसा कहते हुए सब्जी चखती है, उसको सब्जी बहुत अच्छी लगती है। वह जब कभी आलू-टमाटर की सब्जी खाने लगती है।)

(एक दिन उसकी सहेली रूपाली उसके घर आती है वह उसको भी आलू, मटर तथा टमाटर को मिलाकर सब्जी बनाती है थाली में आलू की सब्जी देखकर)

रूपाली : (आश्चर्य से) ओ यशा, तुम अभी तक आलू खाती हो। तुमने अभी तक आलू का त्याग नहीं किया। अरे तुम तो इतनी बड़ी माताजी की भक्त हो। क्या माताजी ने तुम्हें

कभी आलू-प्याज आदि छोड़ने के लिए नहीं कहा।

(माताजी के प्रति उलाहना की बात सुनकर यशा का मुँह उतर जाता है, फिर वह संभलकर बोलती है।)

यशा : नहीं, रूपाली, माताजी तो सबको इन अभक्ष्य पदार्थों को छोड़ने की बहुत प्रेरणा देती है, मुझे भी उन्होंने सप्त व्यसन का, कुगुरु कुदेव की वंदना आदि अनेक त्याग करवाए हैं।

रूपाली : तो क्या आलू-प्याज आदि का नंबर ही नहीं आया। मैंने तो माताजी के एक बार मात्र प्रवचन सुनकर बिना किसी की प्रेरणा के ही आलू-प्याज आदि अभक्ष्य का त्याग कर दिया।

यशा : रूपाली, मैं भी आलू-प्याज का त्याग अवश्य कर देती, लेकिन कभी ऐसा कोई प्रकरण ही नहीं आया कि मैं त्याग कर देती।

नन्दा : बेटी, रूपाली यशा रोज-रोज आलू-प्याज थोड़े ही खाती है कभी-कभी सब्जी आदि उसके मन की नहीं बनती है तो ये दो-चार महिने में एक आध बार आलू-प्याज आदि खा लेती है।

जयिता : मम्मीजी, यशा ने तो आज रूपाली के सामने अपनी माताजी की नाक ही कटवा दी।

(यशा को अपने गुरु के प्रति उलाहना सुनकर बहुत फीलिंग होती है)

(एक बार भव्य और यशा माताजी के दर्शन करने जाते हैं।)

माताजी : और, आप लोगों का धर्मध्यान अच्छा चल रहा है।

यशा : जी माताजी, आपके आशीर्वाद से हम लोगों का धर्मध्यान

ठीक-ठाक चल रहा है।

भव्य : माताजी! जब से आपके दर्शन मिले तब से हमारा तो पूरा घर ही बदल गया और यशा में तो विशेष ही परिवर्तन आ गया, लेकिन.....।

माताजी : भैया, तुम लेकिन कहकर क्यों रुक गए, क्या यशा कुछ गलतियाँ भी करती है?

भव्य : माताजी, मैं तो कितने ही दिनों से यशा की शिकायत करने की सोच ही रहा था। आज आपने पूछ ही लिया तो बता ही देता हूँ।

माताजी आपकी परम भक्ता यशा अभी तो नेलपॉलिस लगाती हैं, ओठों को लाल करने के लिए लिपिस्टिक लगाती है और ऐसे-ऐसे अनेक प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करती है।

माताजी : (यशा की ओर देखकर) क्यों, यशा ये सही कह रहे हैं? (यशा नीचे मुँह कर लेती है, उसकी आँखों में से आँसू बहने लगते हैं।)

माताजी : यशा, इसमें रोने की क्या बात है, गलतियाँ तो आदमी से ही होती हैं।

गलती को समझकर छोड़ देना ही की हुई गलतियों का सबसे बड़ा प्रायश्चित है।

यशा : (धीरे से) माताजी मैं आज से जीवन भर के लिए सभी सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्रियों के उपयोग का त्याग करती हूँ, अब कभी मैं न इनको खरीदूँगी न किसी को दूँगी।

भव्य : माताजी, इसके शृंगार बॉक्स में जो एक डेढ़ हजार की नेलपॉलिस आदि की डिब्बियाँ रखी हैं, उनका क्या

होगा? उनको लगाने की तो छूट दे दो, नहीं तो वे अब फालतू जाएगी।

माताजी : (हँसती हुई) भैया तुमने ठीक कहा यशा, तुम तो यह नियम ले लो कि अब नए प्रसाधन नहीं खरीदूँगी। जितने रखे हैं, उनका ही उपयोग करूँगी।

यशा : नहीं, माताजी उन सबको तो मैं सड़क पर फेंक दूँगी। जो पदार्थ योग्य नहीं हैं, जिससे हिंसा होती है, पाप का आस्रव हो, ऐसी अमूल्य वस्तुओं से भी क्या मतलब? इनकी बात तो दूर मैं तो रेशम की साड़ियाँ तक निकाल कर अलग कर दूँगी और माताजी, ये शिकायत करे, उसके पहले ही मैं आलू-प्याज आदि जमीकन्दों (गड़न्त वस्तुओं का) भी त्याग करती हूँ।

भव्य : (खुश होते हुए) वाह, माताजी सच में आपका तो प्रभाव ही अलग है, आपके चरणों में आने पर तो व्यक्ति के भाव अपने-आप ही बदल जाते हैं। यशा ने आलू आदि का त्याग कर दिया तो मैं भी आज से उन सब चीजों का त्याग करता हूँ।

माताजी : यशा, तुम तो अब यह बताओ कि तुम्हारा स्वाध्याय किसका चल रहा है।

यशा : माताजी, मैं वरांगचरित्र पढ़ रही हूँ।

माताजी : इसके पहले कौन-कौन से ग्रन्थों का स्वाध्याय कर लिया?

यशा : माताजी! मैंने श्रेणिक चरित्र, पार्श्वपुराण, सुभाषित रत्न संदोह, पद्मनन्दि पंचविंशतिका आदि दस-ग्यारह ग्रन्थों का स्वाध्याय किया है।

माताजी : अच्छा, तुमने इतने ग्रन्थ पढ़ लिए तो अब तुम गोम्मटसार

जीवकाण्ड-कर्मकाण्ड ग्रन्थ भी पढ़ सकती हो।

यशा : माताजी! इतने बड़े ग्रन्थ मुझे कैसे समझ में आ पायेंगे?

माताजी : यशा! तुमने इतने ग्रन्थ पढ़ लिए तो अब जीवकाण्ड समझ में आ जाएगा। जो प्रकरण समझ में नहीं आवे उसको नोट कर लेना। किसी साधु के दर्शन करने जाओ तो पूछ लेना।

यशा : ठीक है, माताजी मैं जीवकाण्ड पढ़ने की कोशिश करूँगी। जो समझ में नहीं आयेगा मैं आपसे ही पूछ लूँगी। आप आशीर्वाद दीजिए की मुझे यह ग्रन्थ समझ में आ जावे।

(दोनों दर्शन करके घर आ जाते हैं।)

नन्दा : यशा, माताजी कैसी हैं, माताजी का स्वास्थ्य कैसा है, क्या माताजी के आहार अच्छे हो रहे हैं और तुम्हारी बड़ी माताजी अच्छी हैं?

यशा : मम्मीजी, सब माताजी अच्छी हैं अबकी बार माताजी ने मुझे गोम्मटसार जीवकाण्ड पढ़ने के लिए कहा है।

नन्दा : अच्छा, यशा मैं भी कब से सोच रही थी कि तुम्हें गोम्मटसार पढ़ने के लिए कहूँ लेकिन मैंने सोचा क्या पता तुझे इतना बड़ा ग्रन्थ समझ में आवे या नहीं आवे। अब तो माताजी का आशीर्वाद मिल गया तो समझ में आ ही जायेगा।

(यशा को देखकर जयिता और श्रेयसी भी गोम्मटसार जीवकाण्ड का स्वाध्याय करती हैं। नन्दा तीनों को एक-एक सोने की चैन देती हैं।)

(सोने की चैन देने से दोनों बहुएँ भी हमेशा स्वाध्याय करने लगती हैं।)

(एक दिन अचानक नन्दा की तवीयत बिगड़ जाती है।)

नन्दा : बेटा भव्य, मेरी कैसी भी हालत हो, मुझे हॉस्पिटल मत ले जाना। मुझे अशुद्ध माँसाहारी औषधियाँ मत खिलाना, बॉटलें मत चढ़वाना।

भव्य : हाँ! माँ आपको हॉस्पिटल नहीं ले जाएँगे।

नन्दा : बेटी जयिता, यशा, श्रेयसी यदि कोई मुझे हॉस्पिटल ले जाने लगे तो तुम लोग मत ले जाने देना। मुझे हॉस्पिटल के स्थान पर आचार्यश्री के पास ले जाना, माताजी के पास ले जाना। णमोकार मंत्र सुनाना। समाधिमरण, वैराग्य भावना, बारहभावना आदि सुनाकर धर्मध्यान करवाना। मैं धर्मध्यान करते हुए मर भी जाऊँ तो कोई बात नहीं, लेकिन अभक्ष्य दवाइयाँ खाकर बॉटलें चढ़ते हुए हॉस्पिटल में जाकर जीना मुझे अच्छा नहीं लगता है।

(तीनों बहुएँ हाँ भर देती हैं।)

यशा : मम्मी, आप बिल्कुल चिन्ता नहीं करो। मैं आपको किसी भी हालत में हॉस्पिटल नहीं ले जाने दूँगी।

(नन्दा की तबीयत दिन-प्रतिदिन बिगड़ने लगती है।)

(नन्दा की हालत देखकर यशा, भव्य, जय आदि सभी लोग हॉस्पिटल ले जाने की तैयारी करने लगते हैं। जयिता और श्रेयसी भी माध्यस्थ हो जाती हैं।)

यशा : नहीं, मैं मम्मी को हॉस्पिटल नहीं ले जाने दूँगी। किसी अच्छे वैद्य को बुलाकर भी दवाई करवाई जा सकती है। घर पर भी तो देशी अनुभवी इलाजों से स्वास्थ्य ठीक किया जा सकता है।

भव्य : यशा, तुम बिल्कुल मूर्ख हो क्या? मम्मी को इतने लूज मोसन हो रहे हैं, पेट में पानी नहीं टिक रहा है, यदि एक-दो घंटे भी लूज मोसन बंद नहीं हुए, पेट में पानी

नहीं टिका तो मम्मी के प्राण निकल जाएंगे।

यशा : नहीं, नहीं आज मैं माताजी के द्वारा बताई गई दवाई का प्रयोग करूँगी। एक दिन माताजी ने वैय्यावृत्य के प्रकरण में दवाई बताई थी। मम्मीजी के लूज मोसन बिल्कुल ठीक हो जायेंगे।

यश : (गुस्से में) यशा, क्या तुम इतने दिन सो रही थीं। मम्मी की तबीयत बिगड़े सात-आठ दिन हो गए। अब माताजी वाली दवाई करने की याद आई है, जब हम हॉस्पिटल ले जाने लगे।

चलो भव्य जल्दी से मम्मी को गाड़ी में बिठाओ हॉस्पिटल ले चलते हैं, नहीं तो मम्मी मर जायेंगी।

यशा : (गिड़गिड़ाती हुई) प्लीज भाई साहब आप थोड़ा विश्वास करो, इस दवाई से पक्का मम्मीजी की तबीयत ठीक हो जायेगी। यदि इससे ठीक नहीं होगी तब अपन सोचेंगे।

भव्य : तुम सोचती रहना, सोचते-सोचते ही मम्मी के प्राण निकल गये तो।

यशा : (थोड़ी जोर से) नहीं मैं मम्मीजी को हॉस्पिटल नहीं ले जाने दूँगी। आप लोग कुछ भी करें मैं मम्मीजी की भावनाओं के विरुद्ध कार्य नहीं करने दूँगी।

(यशा जल्दी से आँवले गलाकर चटनी बनाती है और थोड़ी-सी अदरक को पतला-सा बाँटती है और सौंफ, जीरा, धनिया, एक दो डोडा को मिलाकर थोड़ा-थोड़ा बाँट लेती है अर्थात् इतना बाँट लेती है कि उसको थोड़ा चबाया जा सके और उसमें थोड़ी शक्कर (बूरा) मिलाकर लाती है।

यशा : मम्मीजी, थोड़ा सीधी होकर लेट जाओ। आप णमोकार

मंत्र पढ़ो मैं माताजी की बताई हुई दवाई लगाती हूँ।

नन्दा : यशा, मुझे तो नहीं लग रहा है कि अब मैं ठीक हो पाऊँगी। मेरे तो शरीर की पूरी नशें खिंच रही हैं न कुछ खाने का मन हो रहा है और न ही कुछ पीने का। मेरा तो जी घबरा रहा है।

यशा : तो मम्मी हॉस्पिटल ले चले या यहीं पर बॉटल चढ़वा दें। डॉक्टर साहब कह रहे थे बॉटल चढ़ जाएगी तो आप निश्चित ठीक हो जाओगी।

नन्दा : नहीं, यशा तू ये क्या कह रही हो। मुझे तो मात्र तेरे ऊपर ही विश्वास है कि तू मेरे व्रत-नियम नहीं तुड़वायेगी और न ही तुड़वाने दोगी और तू ही ऐसा कहने लगी।

यशा : नहीं मम्मीजी आपकी वेदना मेरे से नहीं देखी जा रही है इसलिए कह रही हूँ फिर भी आप निश्चिन्त रहें, मैं आपका एक भी नियम नहीं टूटने दूँगी।

नन्दा : अच्छा यशा ला तू कौन-सी दवाई लाई है। माताजी की बताई हुई दवाई है तो मैं निश्चित रूप से ठीक हो जाऊँगी।

(यशा जल्दी से णमोकारमंत्र पढ़ती है और नन्दा की नाभि के चारों ओर आँवले की चटनी की बाऊँड्री बनाती है और उसमें अदरक की पतली चटनी भर देती है और नन्दा से कहती है)

यशा : मम्मी लो ये पंजीरी थोड़ी-थोड़ी मुँह में रखकर चबाओ तब तक मैं पानी लेकर आती हूँ।

(यशा जाकर पानी उबालती है और ठंडा करके लाती है।)

यशा : मम्मी लो थोड़ा-थोड़ा पानी पीती जाओ, थोड़ी पंजीरी

खाओ फिर पानी पियो।

(नन्दा वैसा ही करती है)

नन्दा : (थोड़ी देर में) अब मुझे थोड़ा अच्छा लग रहा है। मैंने एक-डेढ़ ग्लास पानी पी लिया, फिर भी अब मुझे उल्टी का मन नहीं हो रहा है।

(यशा 15-20 मिनट में नाभि पर लगाया हुआ आँवला आदि उतार लेती है।)

नन्दा : माताजी की दवाई ने तो बिल्कुल जादू कर दिया है अब मुझे न मोसन हो रहे हैं और न ही उल्टी का मन हो रहा है।

यशा : मम्मीजी, अब आप बहुत जल्दी ठीक हो जाओगी। आप थोड़ी-थोड़ी यह पंजीरी खाती रहना और पानी पीती रहना ताकि शरीर में पानी की कमी न हो पावे।

नन्दा : हाँ, यशा मैं पानी पीती रहूँगी।

(दोपहर में यशा नन्दा को थोड़ा बेल का शरबत पिलाती है नन्दा की तबीयत काफी सुधर जाती है फिर भी यशा दो-तीन दिन तक नन्दा के पास ही सोती है।)

नन्दा : यशा, आज तो मेरे पैर बहुत दुख रहे हैं, इतने पैर तो जब दस्त लग रहे थे तब भी नहीं दुखे थे।

यशा : (तेल की शीशी लेकर) लो मम्मीजी थोड़ी तेल की मालिश करवा लो आपके पैर ठीक हो जायेंगे। थोड़े दिन में जैसे-जैसे तबीयत सुधरेगी पैर में दर्द बढ़ेगा। जब पूरी तबीयत ठीक हो जायेगी पैर भी पूरे ठीक हो जायेंगे।

यशा मालिश करती है, पैर दबाती है और स्तुति-पाठ आदि सुनाती है।

(एक दिन आधी रात में बुखार-सा आ जाता है।)

यशा : (नन्दा की टसकने की आवाज सुनकर) मम्मीजी आपको

क्या हो गया। क्या सिरदर्द कर रहा है?

नन्दा : यशा, मेरे तो शरीर के एक-एक अंग में दर्द हो रहा है मुझे तो आज बहुत ही बैचेनी हो रही है।

(आज यशा नन्दा के साथ रात भर जागती है।)

सुबह उठकर यशा अच्छी दूध, कालीमिर्च, तुलसी के पत्ते आदि डालकर उकाली बनाकर नन्दा को पिलाती है।

(भोजन के समय भी थोड़ा गुड़ का हलुआ बनाकर नन्दा को खिलाती है।)

इस प्रकार आठ-दस दिन में नन्दा का स्वास्थ्य पूरा ठीक हो जाता है।

नंदकुमार : (नन्दा से) अबकी बार तो यशा ने तुम्हारी बड़ी अच्छी सेवा की है।

नन्दा : हाँ, मैं तो पहले ही कहती थी। उसमें दया का परिणाम है, वह किसी की वेदना देख नहीं सकती है।

भाविता : (नन्दा को पूछने आई थी) मम्मी मुझे भी पहले आपकी बातों पर विश्वास नहीं होता था कि यशा भाभी आपकी सेवा कर भी सकती है, लेकिन भाभी की सेवा देखकर तो मैंने दाँतों तले अंगुली ही दबा ली। शायद मैं होती तो भी इतनी अच्छी सेवा नहीं कर पाती।

यश : हाँ, भाविता मैं भी यशा की सेवा देखकर दंग रह गया। उसी ने आगे होकर मम्मी का एक भी नियम नहीं तुड़वाने दिया और ठीक भी कर दिया।

जय : भाई साहब, अब ठीक होने के बाद भी भाभी मम्मी का पूरा ध्यान रखती है, उन्हें चिंता रहती है कि कहीं मम्मी कमजोर हैं, वापस बीमार न हो जावें।

नन्दा की सेवा करने से समाज के काफी घरों में यशा की

चर्चा होने लगती है, वह बहुओं के लिए एक आदर्श बन जाती है।

(एक बार एक आर्यिका संघ आता है। नगर में महिला मण्डल की स्थापना होती है यशा को भी बुलाया जाता है। एक दिन एक 85 वर्ष की दादी का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, उसके बहू-बेटे यशा को बुलाकर ले जाते हैं।)

यशा : (प्रेमपूर्वक) दादीजी कैसा लग रहा है कहती हुई पैर दबाती है।

दादी : यशा आ गई तुम, बहुत अच्छा अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। अब कोई मेरा नियम नहीं तुड़वा सकता है। बेटा! तू तो मेरी समाधि करवा दे।

यशा : (आश्चर्य से) अरे, दादीजी आप ये क्या कह रही हो अभी तो आप अच्छी हैं। मैं अभी वैद्यजी को बुलाकर दिखा देती हूँ। वे शुद्ध दवाई देंगे। आप जल्दी ही ठीक हो जाओगी।

दादी : यशा, अब दवाई वगैरह रहने दो तू तो मुझे कुछ त्याग करवा दे। तू मुझे थोड़ा-थोड़ा त्याग करवा कर समाधि करवा दे ताकि मेरा भव सुधर जावे। मैं जी भी तो बहुत गई हूँ। मेरी उम्र 85 साल की हो गई। यदि अभी समाधि नहीं की और अचानक मौत आएगी तो क्या करेंगे।

यशा : अच्छा दादी अपन आचार्य श्री के पास चलते हैं, आचार्य श्री अभी जबलपुर में विराजमान हैं, वहीं उनके निर्देशन में समाधि कर लेना या फिर वो जैसा कहेंगे वैसा ही अपन करेंगे।

दादी : ठीक है यशा अपन आचार्य श्री के पास चलकर उनके निर्देशन में ही सब काम करेंगे।

(यशा, दादी, दादी के पुत्रादि सभी आचार्यश्री के पास जाकर सल्लेखना की साधना के लिए निर्देशन ले आते हैं। आचार्य श्री के कहे अनुसार ही दादी ने अपने भोजन में, अपनी बोलचाल, रहन-सहन आदि में परिवर्तन कर लिया है। यशा हमेशा दादी को स्वाध्याय पाठ आदि सुनाती है और समाधि की भावना को दृढ़ बनाती है। एक दिन अचानक दादी की हालत बिगड़ जाती है। समाचार मिलते ही यशा जल्दी से दादी के पास पहुँचती है।)

यशा : दादी जी अब थोड़ा और कुछ त्याग कर दो।

दादी : हाँ, बताओ क्या त्याग कर दूँ, मुझे तो लग रहा है कि अब मैं दो-चार दिन भी नहीं जी पाऊँगी।

यशा : दादीजी, आप अब अन्न का जीवन भर का त्याग कर दो।

दादी : हाँ, बहू मैं अब अन्न का जीवन भर के लिए त्याग कर रही हूँ।

इस प्रकार क्रम-क्रम से यशा दादी को सब प्रकार के आहार का त्याग करवा देती है। दादी भी प्रेम से सबका त्याग कर अंतिम समय में णमोकार मंत्र सुनकर मरण को प्राप्त हुई।

इस सल्लेखना के समय की गई वैय्यावृत्ति को देखकर लोगों को उस पर बहुत विश्वास हो गया। सभी लोग उसको बहुत सम्मान देने लगते हैं।

इस प्रकार एक अच्छी सास ने युक्ति पूर्वक अपनी बहू को इतनी अच्छी बहू बना दिया एवं समाज में प्रतिष्ठित बना दिया।

समाप्त